Pushpa Chauhan
Professor, (Deptt. of Economics)

3. समलोचदार मांग - जिस अनुपात में किसी वस्तु के मूल्य में परिवर्तन होता है उसी अनुपात में वस्तु की मांग में परिवर्तन होता है तो इसे समलोचदार मांग कहते हैं जैसे किसी वस्तु के मूल्य में 20% की कमी होती है और मांग में भी 20% की वृद्धि होती है तो यहां मांग की लोच का मान 1 के बराबर होता है यानि $E_D = 1$.

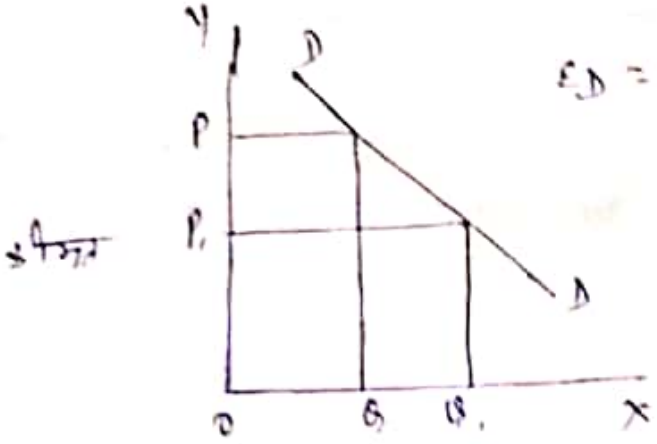

यहां उपरोक्त रेखाचित्र में OX axis पर मांग की मात्रा तथा OY पर कीमत है। कीमत में PP_1 के बराबर कमी होने से मांग में QQ_1 के बराबर वृद्धि हो रही है जो समान परिवर्तन को दर्शा रहा है।

4. सापेक्षिक बेलोचदार मांग - किसी वस्तु के मूल्य में जिस अनुपात से परिवर्तन होता है उसकी मांग में उससे कम अनुपात से परिवर्तन होता है। जैसे किसी वस्तु के मूल्य में 50% परिवर्तन होने पर मांग में 30% परिवर्तन होता है तो यह सापेक्षिक बेलोचदार मांग है यहां $E_D < 1$ होता है।

Scanned with CamScanner

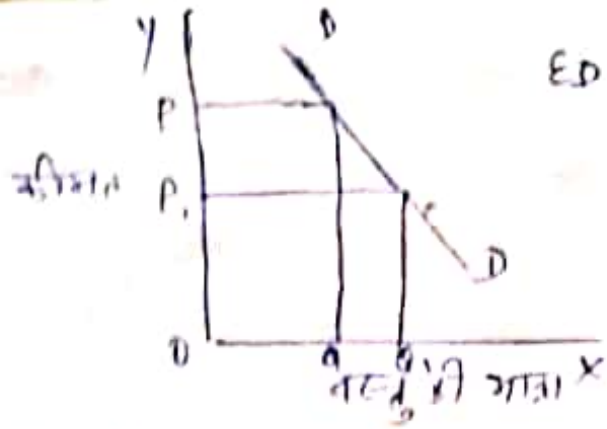

ED < 1

उपरोक्त रेखाचित्र से स्पष्ट है कि कीमत में PP_1 के बराबर परिवर्तन हो रहा है जिसके फलस्वरूप मांग में QQ_1 परिवर्तन हो रहा है जो PP_1 से कम है। जीवन की आवश्यकता वाली वस्तुएं जैसे - भोजन इंधन में देखी जाती है।

5. पूर्णतया बेलोचदार मांग → जब वस्तु के मूल्य में असीम परिवर्तन होने पर मांग में कोई परिवर्तन नहीं होता है तो इसे पूर्णतया बेलोचदार मांग कहते हैं यह मुख्यतः दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं एवं दवाइयों की मांग पर होता है।

ED = 0

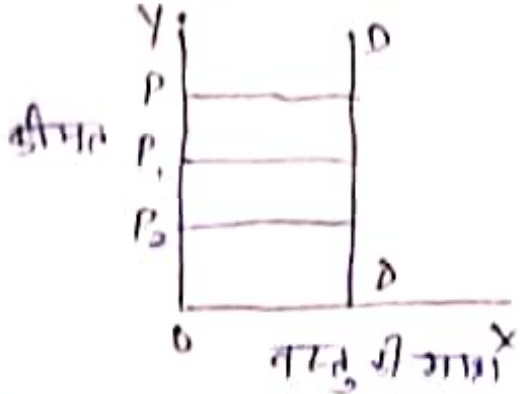

उपरोक्त रेखाचित्र में OX axis पर मूल्य तथा OY पर मांग की मात्रा है। यहां मूल्य में परिवर्तन हो रहा है लेकिन मांग यथावत है यानि मांगवक्र OY अक्ष के समान्तर है। क्योंकि केवल मूल्य में परिवर्तन हो रहा है मांग अपरिवर्तित है।

इस प्रकार पूर्णतया लोचदार मांग तथा पूर्णतया बेलोचदार मांग का वास्तविक जीवन में कोई महत्व नहीं होता है। दोनों काल्पनिक हैं। सामान्यतः मांग की लोच तीन प्रकार की होती है - आपेक्षिक लोचदार मांग, समलोचदार मांग एवं आपेक्षिक बेलोचदार मांग।

Scanned with CamScanner

मांग की लोच को प्रभावित करने वाले तत्व

1. वस्तु का गुण - आवश्यकता की वस्तु की मांग बेलोचदार होती है जैसे नमक, दवा। क्योंकि इनकी कीमत में परिवर्तन होने पर भी उपभोक्ता आवश्यकता से अधिक नहीं खरीदते है आरामदायक वस्तु की मांग लोचदार होती है जैसे कूलर, टी.वी., फ्रिज। कीमत में परिवर्तन होने पर मांग में साधारण परिवर्तन होता है विलासितापूर्ण वस्तु की मांग की लोच अधिक लोचदार होती है।

2. वस्तु के स्थानापन्न वस्तुओं की उपलब्धि - किसी वस्तु की अनेक स्थानापन्न वस्तुएं होती है तो उसकी मांग की लोच अधिक होती है जैसे - दाल। अगर अरहर की दाल की कीमत बढ़ जाती है तो उसके बजाय पर चना, मूंग के दाल का उपयोग किया जाता है।

3. वस्तु का विभिन्न प्रयोग - ऐसी वस्तुएँ जिनको अनेक प्रयोगों में लाया जा सकता है जैसे - बिजली, कोयला इत्यादि। इन वस्तुओं की मांग की लोच अधिक लोचदार होती है। यदि बिजली की दर बढ़ते है तो उसकी मांग घटेगी क्योंकि इसका उपयोग कम महत्वपूर्ण प्रयोग से हटाकर महत्वपूर्ण प्रयोग में ही किया जाएगा।

4. उपभोक्ता की आय का व्यय किया जाने वाला भाग - जिन वस्तुओं पर आय का बहुत थोड़ा भाग खर्च किया जाता है उनकी मांग की लोच बेलोचदार होती है जैसे - सुई धागा, बटन इत्यादि। जिन वस्तुओं पर आय का अधिक भाग खर्च होता है उसकी मांग की लोच अधिक लोचदार होती है जैसे - कपड़ा।

Scanned with CamScanner

5. संयुक्त मांग – कुछ वस्तुएं ऐसी होती हैं जो कि दूसरे वस्तु के साथ मांगी जाती हैं जैसे डबलरोटी के साथ मक्खन, सिगरेट तथा दियासलाई इत्यादि तो इनकी मांग की लोच प्रायः बेलोचदार होती है।

6. स्वभाव तथा आदतों का प्रभाव - यदि किसी उपभोक्ता को किसी वस्तु की आदत हो जाती है तो उस वस्तु की कीमत बढ़ने पर भी उसका प्रयोग कम नहीं करता है। ऐसी वस्तु की मांग बेलोचदार होती है। इसी प्रकार सामाजिक रीति-रिवाज में प्रयोग आने वाली वस्तु की मांग की लोच बेलोचदार होती है।

इस प्रकार मांग की लोच का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक महत्व है। केन्स के अनुसार "मार्शल की सबसे बड़ी देन मांग की लोच का सिद्धान्त है तथा इसके अध्ययन के बिना मूल्य तथा वितरण के सिद्धान्तों की विवेचना सम्भव नहीं है।

Scanned with CamScanner